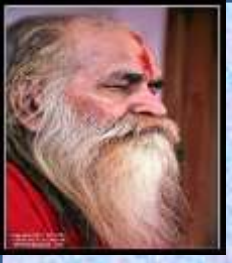

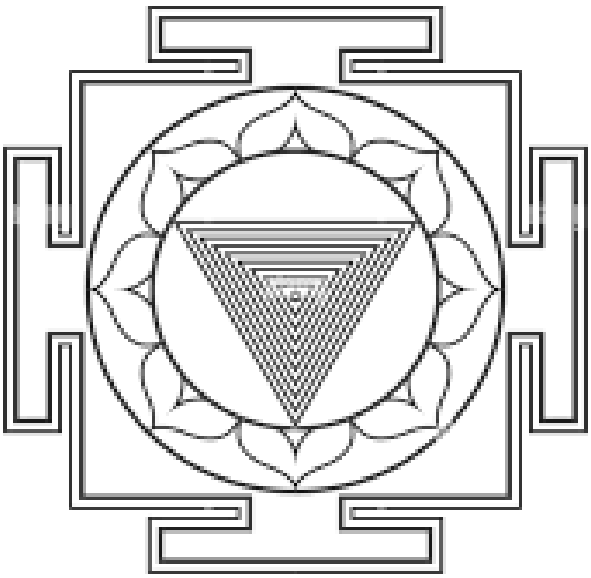

सौजन्य: मां पाताल भैरवी मन्दिर, श्री बर्फानीधाम, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

त्रिपुरभैरवी : षष्ठम महाविद्या

क्षीयमान विश्व के अधिष्ठान दक्षिणामूर्ति कालभैरव हैं । उनकी शक्ति ही त्रिपुरभैरवी है । ये ललिता या महात्रिपुरसुन्दरी की रथवाहिनी हैं । ब्रह्माण्डपुराण में इन्हें गुप्त योगिनियों की अधिष्ठात्री देवी के रूप में चित्रित किया गया है । मत्स्यपुराण में इनके त्रिपुरभैरवी, कोलेशभैरवी, रुद्रभैरवी, चैतन्यभैरवी तथा नित्याभैरवी आदि रुपों का वर्णन प्राप्त होता है । इन्द्रियों पर विजय और सर्वत्र उत्कर्ष की प्राप्ति हेतु त्रिपुरभैरवी का उपासना का वर्णन शास्त्रों मे मिलता है । महाविद्याओं में इनका छठा स्थान है । त्रिपुरभैरवी का मुख्य उपयोग घोर कर्म में होता है ।

इनके ध्यान का उल्लेख दुर्गासप्तशती के तीसरे अध्याय में महिषासुर-वध के प्रसंग में होता है । इनका रंग लाल है । ये लाल वस्त्र पहनती हैं, गले में मुण्डमाला धारण करती हैं और स्तनों पर रक्त चन्दन का लेप करती हैं । ये अपने हाथों में जपमाला, पुस्तक तथा वर और अभय मुद्रा धारण करती हैं । ये कमलासन पर विराजमान हैं । भगवती त्रिपुरभैरवी ने ही मधुपान करके महिष का हृदय विदीर्ण किया था । रुद्रयामल एवं भैरवीकुलसर्वस्व में इनकी उपासना तथा कवच का उल्लेख मिलता है संकटों से मुक्ति के लिये भी इनकी उपासना करने का विधान है ।

घोर कर्म के लिये काल की विशेष अवस्थाजनित मानों को शान्त कर देने वाली शक्ति को ही त्रिपुरभैरवी कहा जाता है । इनका अरुण वर्ण विमर्श का प्रतीक है । इनके गले में सुशोभित मुण्डमाला ही वर्णमाला है । देवी के रक्तलिप्त पयोधर रजोगुणसम्पन्न सृष्टि-प्रक्रिया के प्रतीक हैं । अक्षजपमाला वर्णसमाम्नाय की प्रतीक है । पुस्तक ब्रह्मविद्या है, त्रिनेत्र वेदत्रयी हैं तथा स्मिति हास करुणा है ।

आगम ग्रन्थों के अनुसार त्रिपुरभैरवी एकाक्षर रूप (प्रणव) हैं । इनसे सम्पूर्ण भुवन प्रकाशित हो रहे हैं तथा अन्त में इन्हीं में लय हो जायँगे । 'अ' से लेकर विसर्गतक सोलह वर्ण भैरव कहलाते हैं तथा क से क्ष तक के वर्ण योनि अथवा भैरवी कहे जाते हैं । स्वच्छन्दोद्योत के प्रथम पटल में इस पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है । यहाँ पर त्रिपुरभैरवी को योगीश्वरी रूप में उमा बतलाया गया है । इन्होंने भगवान् शङ्कर को पति रूप में प्राप्त करने के लिये कठोर तपस्या करने का दृढ़ निर्णय लिया था । बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी इनकी तपस्या को देखकर दंग रह गये । इससे सिद्ध होता है कि भगवान् शङ्कर की उपासना में निरत उमा का दृढ़निश्चयी स्वरूप ही त्रिपुरभैरवी का परिचायक है । त्रिपुरभैरवी की स्तुति में कहा गया है कि भैरवी सूक्ष्म वाक् तथा जगत् के मूल कारण की अधिष्ठात्री है ।

त्रिपुरभैरवी के अनेक भेद हैं ; जैसे सिद्धिभैरवी, चैतन्यभैरवी, भुवनेश्वरीभैरवी, कमलेश्वरीभैरवी, कामेश्वरीभैरवी, षट्कूटाभैरवी, नित्याभैरवी, कोलेशीभैरवी, रुद्रभैरवी आदि ।

सिद्धिभैरवी उत्तराम्नाय पीठ की देवी हैं । नित्याभैरवी पश्चिमाम्नाय पीठ की देवी हैं, इनके उपासक स्वयं भगवान् शिव हैं । रुद्रभैरवी दक्षिणाम्नाय पीठ की देवी हैं । इनके उपासक भगवान् विष्णु हैं । त्रिपुरभैरवी के भैरव वटुक हैं । मुण्डमालातन्त्रानुसार त्रिपुरभैरवी को भगवान् नृसिंह की अभिन्न शक्ति बताया गया है । सृष्टि में परिवर्तन होता रहता है । इसका मूल कारण आकर्षण-विकर्षण है । इस सृष्टि के परिवर्तन में क्षण-क्षण में होने वाली भावी क्रिया की अधिष्ठातृशक्ति ही वैदिक दृष्टि से त्रिपुरभैरवी कही जाती हैं । त्रिपुरभैरवी की रात्रि का नाम काल रात्रि तथा भैरव का नाम काल भैरव है । (गीताप्रेस गोरखपुर से साभार...)

जगत में प्रतिक्षण पदार्थ नष्ट होते रहते हैं इसे नित्य प्रलय कहा जाता है और यह कार्य रूद्र का है जो कि विनाशकारी होने के कारण यम भी कहलाते हैं। दक्षिण में यम का वास है, वे दक्षिण के लोकपाल हैं और अग्नितेज की वहां सत्ता है। इस कारण रूद्र के इस स्वरूप को दक्षिणामूर्ति अथवा कालभैरव के नाम से जाना जाता है और इनकी शक्ति ही भैरवी अथवा त्रिपुरभैरवी है । राजराजेश्वरी भुवनेश्वरी सभी भुवनों के पदार्थों की रक्षा करती हैं, कालान्तर में त्रिपुरभैरवी उन सबका नाश करती हैं । अन्यान्य धर्मग्रन्थों में त्रिपुरभैरवी के विविध प्रकार के मन्त्र और न्यास दिये गए हैं । परम्परानुसार हमने भगवती त्रिपुरभैरवी के जिस मन्त्र का विधान प्रस्तुत किया है वह " **हसैं हसकरीं हसैं** " है । इसके ऋषि दक्षिणामुर्ति हैं, ऐं बीज है, ह्रीं शक्ति है तथा क्लीं कीलक है । भगवती के यन्त्र की पाँच आवरणों में पूजा सम्पन्न होती है । हवन प्रक्रिया में पुष्पों के साथ बहेडे का प्रयोग करना चाहिये । साधकों को गुरुनिर्देशित मार्ग का ही अनुसरण करना चाहिये । परम्परानुसार अन्य मूलमन्त्र और भी हैं जैसे त्रिपुरभैरवी का एक अन्य-**ह्सौं ह्स्क्लरीं हसौं**, चैतन्यभैरवी का-**स्हैं स्क्लह्रीं स्हौं**, रूद्रभैरवी का-**हस्ख्रें हस्क्लरीं हसौं**, भुवनेश्वरी भैरवी का - **हसैं हस्क्लह्रीं हसौः** इत्यादि । पूजन का विधान सभी का एक जैसा ही है । हमने पूर्व में स्पष्ट कर दिया है कि सम्पूर्ण सपर्या में जो अन्य उपचार हैं जैसे शुद्धिशोधन, तत्वाचमन, प्राणायाम, पृथ्वीपूजन, देह रक्षा, गुरुगणपति पूजनादि, संबंधित न्यास, सामान्यार्घ्य स्थापन, विशेषार्घ्य स्थापन, शंख-घण्टापूजन, भूतशुद्धि, षोडशोपचारपूजन, बलि इत्यादि के क्रम का पालन करना चाहिये । पूजन के पश्चात् भगवती के विविध नामों से अक्षत-पुष्प से अर्चन, स्तुति आदि करने से माता का अनुग्रह अवश्य प्राप्त होता है । श्रीविद्या परम्परा में सपर्या का विधान क्रम से उपलब्ध है अतः उससे लाभान्वित हो सकते हैं ।